रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– के0 पी0 सिटी –67/2024–26

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में
सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निषपक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014
सम्पर्क सूत्र :– 9450153215 , 9415074806 , 9415486103

वर्ष – 47 ● अंक – 16 ● कानपुर 16 से 31 अगस्त 2025 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य ₹ 100

बड़ी मेहनत लगती है आप तक पहुँचने में

समाज को जीवित रहने के लिए आवश्यक होता है कि उसकी अच्छाईयों और बुराईयों के बारे में आम जन को पता लगता रहे जिससे कि उसके भविष्य का मार्ग सुगम और सुदृढ़ होता रहे, यह काम संवाद के माध्यम से ही सम्भव होता है, चूंकि संवाद एक दूसरे के पास पहुँचने से ही कार्यों की समीक्षा होती है लोगों के दृष्टिकोंण आते हैं समाज हमें किस तरह से स्वीकार कर रहा है इसकी भी जानकारी हमें इसी माध्यम से होती है और यह काम बखूबी निभाते हैं समाचार पत्र।

समाचार पत्रों को विचारक अपनी–अपनी तरह से परिभाषित करते हैं कोई उसे समाज का दपर्ण कहता है, तो कोई उसे समाज सुधार का माध्यम मानता है, तो कोई उसे समाज के दायित्व निर्वाहक के रूप में स्वीकार करता है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में भी समाचार पत्रों का विशेष योगदान है इन्ही समाचार पत्रों के माध्यम से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की गतिविधियों के बारे में जानकारी होती है लगभग आज से 150 वर्ष पूर्व इलेक्ट्रो होम्योपैथी में समाचार पत्रों के छपने का सिलसिला प्रारम्भ हुआ था प्राप्त जानकारी के आधार पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी का सबसे पहला समाचार पत्र डा0 बल्देव प्रसाद सक्सेना द्वारा लखनऊ में 1907 में प्रकाशित करवाया गया था इस समाचार पत्र का नाम रिसाला माहनामा इलेक्ट्रो होम्योपैथी था इसका प्रकाशन मात्र 5 वर्ष तक रहा, 1912 में निजी कारणों से इस मासिक समाचार पत्र का प्रकाशन बन्द हो गया, लेकिन एक बार जो सिलसिला शुरू हो जाता है तो वह कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में चलता ही रहता है इस सिलसिले को डा0 नन्दलाल सिन्हा ने जारी रखा डा0 नन्दलाल सिन्हा द्वारा 2 समाचार पत्रों का प्रकाशन किया गया जिनका नाम था मेडिसिनर समय ने करवट ली और एक अन्तराल के बाद मार्डन रेमेडीज़ नामक पत्रिका का प्रकाशन भी होने लगा यह दोनों समाचार पत्रिकायें अंग्रेजी भाषा में थीं जन सामान्य तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी की बात को पहुँचाने के लिए डा0 नन्दलाल सिन्हा द्वारा (Perfect Health) स्वास्थ्य रक्षा नामक पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी में किया गया इस पत्रिका ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी में क्रान्तिकारी कार्य किया चूँकि ये सारी की सारी पत्रिकायें आज़ादी के पहले की थीं इसलिए इनका कार्यक्षेत्र आज के पाकिस्तान, बंगलादेश, सिलोन (अब श्रीलंका) तक था उस समय इन पत्रिकाओं के माध्यम से लोगों के मध्य इलेक्ट्रो होम्योपैथी के समाचार पहुँचते थे लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी के बारे में जानते थे इसका लाभ डा0 नन्दलाल सिन्हा को यह हुआ कि पूरे विश्व से लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी सीखने की इच्छा से डा0 सिन्हा से जुड़ने लगे और एक तरह से सम्पूर्ण विश्व में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की पहचान धीरे–धीरे होने लगी।

देश की आज़ादी के बाद कुछ दिनों तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी में अजीब सी खमोशी रही, कानपुर के बाद पटना इलेक्ट्रो होम्योपैथी का सबसे महत्वपूर्ण शहर हो गया था, पटना के ही डा0 ब्रज बिहारी प्रसाद सिंह द्वारा मेडिसिनर नामक पत्रिका का प्रकाशन शुरु किया गया अब तो लोगों में एक लालसा जागृत हो गयी इसी क्रम में देखा देखी में पटना के ही डा0 सी0 डी0 मिश्रा "प्रभाकर" द्वारा भी एक इलेक्ट्रो होम्योपैथी पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया देश के अन्य कोनों से भी पत्र पत्रिकाओं के प्रकाशन की होड़ सी लग गयी, जिसे देखो मुद्रक प्रकाशक बनकर पत्रकारिता के बाज़ार में कूदने लगा यह अलग बात है कि यह पत्र – पत्रिकायें अधिक समय तक जीवित नहीं रहीं।

वर्ष 1953 से लेकर 1969 तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी में आन्दोलनों का दौर चला कुछ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ जो आज गुमनाम हो चुके हैं डा0 मुकुट बिहारी सिन्हा, डा0 मुरारी शरण श्रीवास्तव, डा0 युद्धवीर सिंह, डा0 मोरध्वज सिंह प्रलयंकर, डा0 एस0 एम0 ए0 अज़ीज़, डा0 रमाशंकर, डा0 एस0 एन0 झा डा0 सुदामा प्रसाद सिंह आदि कुछ ऐसे नाम हैं जिनके नामों की इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत में कभी तूती बोलती थी।

आज की पीढ़ी में यह सभी अप्रासंगिक हो चुके हैं लोग इनके बारे में जानना तक पसन्द नहीं करते हैं परन्तु इन सारे के

शेष पेज 2 पर

भ्रामक प्रचार से दूर रहें !

21 जून, 2011 व 4 जनवरी, 2012 के आदेश
इलेक्ट्रो होम्योपैथी को चिकित्सा, शिक्षा,
अनुसन्धान एवं प्रैक्टिस की अनुमति देते हैं

हम होंगे कामयाब.....एक दिन

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का सपनों से बहुत बड़ा सम्बन्ध है सपनों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी शुरू होती है और जब तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जुड़े रहते हैं तब तक स्वप्नलोक में विचरण करते रहते हैं।

हर माता पिता यह चाहता है कि उसके पाल्य समाज में सम्मान जनक अपना स्थान बनाये समान्यतयः हर माता पिता का यह स्वप्न है कि उसका पाल्य डाक्टर या इंजीनियर बने इसके लिए वह प्रयास भी करता है, सफ़ल हो जाये तो अच्छी बात है, हमारे भारत वर्ष में यह आम बात है कि जो एलोपैथी का चिकित्सक बने वही डाक्टर है बाकी सब वैकल्पिक अन्य देशों की बात अलग है जहाँ बालक या बालिका अपनी क्षमता व इच्छानुसार अपने जीवन यापन के व्यवसाय का चयन करते हैं और उसी में सफ़ल होकर श्रेष्ठता का प्रर्दशन करते हैं परन्तु भारतवर्ष में अभी भी अभिभावक की मर्ज़ी से ही व्यवसाय का चयन होता है, बालक या बालिका में प्रतिस्पर्धा पार करने की क्षमता हो या न हो पर माता पिता यही चाहता है कि उसका पाल्य उसकी इच्छा का सम्मान करे और जो वह चाहता है उसी क्षेत्र में जाये।

जब पाल्य नीट की परीक्षा पास नहीं कर पाता तब माता पिता अपने सपनों को पूरा करने के लिए अपने पाल्य का प्रवेश इलेक्ट्रो होम्योपैथी में करा देता है और यहीं से शुरू होती है सपनों की रंगीन दुनियाँ, माता पिता सपना देखते हैं कि उसका पाल्य चिकित्सक बन जायेगा और जो सपना पूरा करने वाला है बालक या बालिका वह अपने भविष्य के रंगीन सपने देखने लगता है कि पाँच वर्ष के बाद वह डाक्टर बनकर निकलेगा समाज में सम्मान अर्जित करेगा, प्रवेश लेते ही उसके सपनों में पंख लग जाते हैं वह स्वर्णिम भविष्य की अच्छी कल्पनाओं में खो जाता है, वह मन ही मन इतना प्रसन्न होता है कि अब वह अपनी सारी इच्छायें पूरी कर लेगा, आवश्यकताओं की वस्तुओं के साथ–साथ सुविधाभोगी वस्तुयें भी अपने लिए अर्जित कर लेगा, लेकिन धीरे–धीरे जैसे–जैसे समय बीतता है तब वह मान्यता के सपनों में खो जाता है, यह तो अच्छी बात है कि कुछ लोग यह स्पष्ट बता देते हैं कि अभी इस पद्धति को मान्यता नहीं मिली है, कुछ ऐसे भी होते हैं जो पता नहीं क्या–क्या कह देते हैं ! और इसी क्या–क्या की उधेड़बुन में नव प्रवेशी जो पुराना हो चुका होता है काफी कुछ सपने देख चुका होता है आन्दोलन की राह पर चलता है रोज़ नई कल्पनायें बनती बिगड़ती हैं और इसी कल्पना लोक में विचरण करते हुए वह अपना कोर्स पूरा कर लेता है, अब उसके सामने दायित्व होता है कि वह अपने भविष्य का निर्माण कैसे करे ? इसी भविष्य के निर्माण के लिए वह सबकुछ कर देता है जो उसे नहीं करना चाहिये चिकित्सकीय चकाचौंध में फंसकर बहुत कुछ जल्दी जल्दी पाने की अपेक्षा में उसका रूझान एलोपैथी की तरफ़ चला जाता है जिसका कि वह अधिकारी भी नहीं होता है।

उसके इस रूझान से उसका तो भला हो जाता है परन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भला नहीं होता है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी के भले के लिए आवश्यकता है कि अधिक से अधिक संख्या में हमारे चिकित्सक अपनी ही विधा से चिकित्सा व्यवसाय करें ऐसा करने से रोगियों को स्वस्थ्य लाभ तो मिलता ही है और चिकित्सक को आत्म – संतुष्टि का अनुभव प्राप्त होता है इस प्रकार से अपनी पूरी क्षमता से इलेक्ट्रो होम्योपैथी का समर्थक भी हो जाता है किसी एक चिकित्सक की प्रगति को देखकर उसके साथियों को भी यह प्रेरणा मिलती है कि वह भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के शुद्ध चिकित्सक बने, अपनी–अपनी विधा को अपनाकर भी सपने पूरे किये जा सकते हैं यह आवश्यक नहीं है कि सपनों को पूरा करने के लिए हम दूसरों के कन्धों का सहारा लें क्योंकि इस सत्य को हमें कभी नहीं भूलना चाहिये कि दूसरा कन्धा कितना भी मज़बूत क्यों न हो लेकिन वह जीवन भर का सहारा नहीं होता है, आज के परिदृश्य में जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति बड़ी तेज़ी के साथ प्रगति के रास्ते पर चल रही है जिस शासकीय संरक्षण की हम वर्षों से बाँट जोह रहे हैं, धीरे–धीरे हमारी वह इंतज़ार करने की सीमा समाप्त होने जा रही है केन्द्र सरकार व प्रदेश सरकार द्वारा जो सकारात्मक रूख इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए दिखाया जा रहा है वह हमारी आशाओं को बल प्रदान करने वाला है।

यह निर्विवाद सत्य है कि आगे बढ़ने के लिए प्रयास करना आवश्यक है, हम भी प्रयास कर रहे हैं हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि उ0प्र0 में सरकारी बोर्ड का गठन शीघ्र ही होगा।

बड़ी मेहनत लगती आप तक पहुँचने में प्रथम पेज से आगे

सारे स्तम्भों की प्रतिभा को हम नमन करते हैं और मन यही कहता है कि जाने कहां गये ये लोग जिन लोगों ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दास्तान में धीरे–धीरे कहीं गुमनाम होते जा रहे हैं लेकिन इतिहास कभी भी किसी को नहीं भूलता और समय आने पर हर व्यक्ति के कार्यों का सम्मान होता है और यह कार्य करता है समाचार पत्र, आज जो लोग इन महान लोगों को भूलने का प्रयास कर रहे हैं ऐसे लोगों के लिए यह दो पंक्तियां समर्पित हैं ....

जैसे भूलों के पृष्ठों को नही माफ़ करता इतिहास,
अन्धकार की सीमा पर ही स्वागत पाता है प्रकाश।

इन प्रकाश पुंजों के कार्य इलेक्ट्रो होम्योपैथी के इतिहास में सदैव अंकित रहेंगे समाचार पत्रों के प्रकाशन का सिलसिला धीरे–धीरे बढ़ता चलता गया और उनका दायरा भी बढ़ता गया लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से 14 जनवरी, 1979 को कानपुर के डा0 एम0 एच0 इदरीसी द्वारा इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट नामक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया इस पत्रिका ने जनता के बीच पैठ बनानी शुरू की, स्पष्ट और साफ़ सुथरी बात होने के कारण लोग बाग इस पत्रिका को प्रसन्द करने लगे, बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए प्रकाशक द्वारा इस त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन की अवधि घटाकर मासिक कर दी गयी, धीरे–धीरे पूरे देश में इस पत्रिका की मांग होने लगी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सक और समर्थकों की मांग पर इस पत्रिका को पाक्षिक करना पड़ा आज यह इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत में सर्वाधिक प्रसारित व पढ़े जाने वाला एक मात्र समाचार पत्र है।

47 वर्षों से इस पत्रिका का नियमित प्रकाशन हो रहा है, 2003 से 2012 के कालखण्ड में जब बड़े–बड़े इलेक्ट्रो होम्योपैथी के दिग्गज अपनी गतिविधियों से किनारा कर रहे थे पाक्षिक इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट का प्रकाशन तब भी नियमित जारी रहा इसी प्रकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी मेडिकल न्यूज, स्वास्थ्य घोष, चिकित्सा पल्लव नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ उत्तर प्रदेश के अलावा राजस्थान, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, झारखण्ड, चेन्नई आदि राज्यों से भी विभिन्न तरह की पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ यह अलग बात है कि आज तक किसी भी संगठन या समूह द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के दैनिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ नहीं किया गया है।

वैसे किसी भी चिकित्सा पद्धति के लिए इस तरह के दैनिक समाचार पत्रों को निकालना अपने आप में एक टेढ़ी खीर है आज नियमित रूप से सिर्फ़ पाक्षिक इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट का ही प्रकाशन हो रहा है, इस समाचार पत्र के माध्यम से प्रकाशक मण्डल का यह पूरा प्रयास होता है कि पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी से सम्बन्धित जो भी घटनायें घटित हो रही हैं उनकी जानकारी पाठकों तक पहुँचायी जाये विभिन्न संगठनों द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में क्या कार्य किये जा रहे हैं ? इनकी जानकारी भी बिना किसी भेदभाव के नियमित रूप से प्रकाशित की जाती है, आज कल इलेक्ट्रो होम्योपैथी मान्यता की गतिविधियां बहुत तेज़ी से फैल रही हैं इस सच और झूठ की जानकारी भी गज़ट के माध्यम से चिकित्सकों तक पहुँचाने का प्रयास किया जाता है हमारा प्रयास होता है कि जिन विभूतियों ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कार्य किया है उनकी जानकारी सब तक पहुँचे।

निष्पक्ष पत्रकारिता के कारण ही यह समाचार पत्र निरन्तर लोकप्रियता की नई ऊचाईयां छू रहा है, सम्पादक मण्डल इस बात में पूरी सतर्कता बरतता है कि किसी भी तरह से ऐसा कोई समाचार प्रकाशित न किया जाये जिस से समाचार की विश्वसीनता संदिग्ध हो, चिकित्सकों के नये ज्ञानार्जन के लिए यह प्रयास किया जाता है कि कुछ ऐसे वैज्ञानिक और तथ्यपरक लेख प्रकाशित किये जायें जिससे चिकित्सकों का ज्ञानार्जन हो साथ–साथ ऐसे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों के अनुभव भी प्रकाशित करने का प्रयास करते हैं जिन्होंने प्रैक्टिस के समय में अर्जित किये हैं।

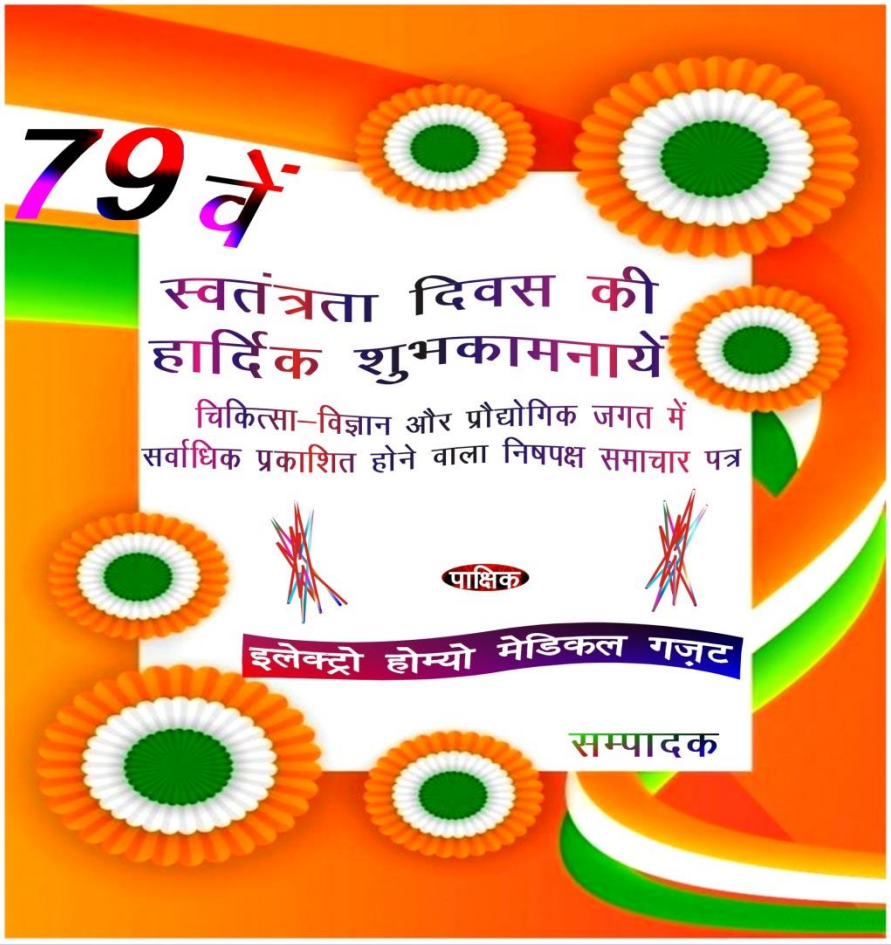

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनायें

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0

8—लालबाग, कमला शर्मा मार्ग, लखनऊ—226001

प्रशा0 कार्या0 : 127/204 ''एस'' जूही,कानपुर—208014

Email: registrarbehmup@gmail.com

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक

मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया

भारत सरकार स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय

द्वारा आदेश प्राप्त देश का एक मात्र संगठन

Offered Courses

Name of the Course	Abbreviation	Eligibility	Duration
Fellow of Medicine in Electro Homoeopathy	F.M.E.H.	10+2 (Any Stream) or Equivalent	Two Years (4 Semester)
Certificate in Electro Homoeopathy	C.E.H.	10th. Standard or Equivalent	2 Years
Advance Certificate in Electro Homoeopathy	A.C.E.H.	RegisteredPractitioner in any Branch or Equivalent	1 Year
Graduate in Electro Homoeopathic System	G.E.H.S.	10+2 (Bio Group) or Equivalent	4 Years Plus (1 Year Internship)
Post Graduate in Electro Homoeopathy	P.G.E.H.	Graduate in any Medical Stream or Equivalent	2 Years

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0

8–लालबाग, कमला शर्मा मार्ग,
लखनऊ–226001
प्रशा0 कार्या0 : 127/204 ''एस''
जूही,कानपुर–208014

website:
www.behm.org.in

बी0 ई0 एच0 एम0 के लिए डा0 अतीक अहमद द्वारा गजट प्रेस 126 टी/22 'ए' रामलाल का तालाब, जूही, कानपुर–208014 से मुद्रित एवं मिथलेश कुमार मिश्रा द्वारा कम्प्यूटराइज्ड करा कर 9/1 पीली कालोनी, जूही, कानपुर–208014 से प्रकाशित किया।